अमृत वाणी

अवसर सूर्य उदय की तरह होते है यदि आप ज्यादा देर प्रतीक्षा करेंगे तो आप उन्हें गंवा देंगे।

–अज्ञात,

जहरीली शराब की त्रासदी

पंजाब के सीमावर्ती जिला तरन तारन में हुए जहरीली शराब कांड में मृतकों की संख्या बढ़कर सौ हो गई है। विगत 30 जुलाई को हुए इस जहरीले शराब कांड के बाद से मौत का यह सिलसिला लगातार जारी है। मृतकों के अलावा इस हादसे से प्रभावित और भी कई लोग है जिनके शराब में मिले जहर के प्रभाव से दृष्टि खोने की आशंका उत्पन्न हो गई है।

दरअसल जहरीली शराब पिलाकर लोगों की जान दांव पर लगाने वाले ये विक्रेता अपना मुनाफा बढ़ाने के उद्देश्य से शराब में ऐसी चीजे मिलाते हैं जिससे शराब के आदी लोग उनकी दुकान की ओर खीचें चले आए तथा अधिक से अधिक शराब पीएं। इसका नतीजा क्या होता है यह तो सबके सामने है।

वस्तुतः तरणतारण में हुआ यह हादसा कोई नया या पहली घटना नहीं है। इससे पहले भी देश के विभिन्न शहरों में ऐसी कई घटनाएं हो चुकी है जिसमें सैकड़ों लोगों ने अपनी जान गंवाई है तथा कितने ही लोग वर्षों से उसके तरह तरह के दुष्प्रभाव सह रहे है।

हर बार यही देखा जाता है कि नैतिक्ताविहीन ये शराब व्यापारी कारखानों, औद्योगिक केन्द्रों आदि के करीब अपनी दुकाने खोलते हैं ताकि इन संस्थानों में कार्यरत श्रमिक उनकी दुकानों की ओर सहज ही आकर्षित हो सके। काम से थके मांदे लौटते श्रमिक भी नशे के आकर्षण से इनकी ओर खींचे चले जाते है। गंभीर तथ्य तो यह है कि ये व्यापारी केवल शराब का धंधा ही नहीं करते बल्कि अधिकाधिक मुनाफा कमाने के लालच में उसमें ऐसी वस्तुओं की मिलावट कर देते है जो कई बार जानलेवा साबित हो जाता है।

त्रासदी यह है कि ऐसी घटनाएं एक बार नहीं बार-बार हो रही है, जिनके कारण कितनी जाने जा रही है, कितने ही परिवार उजड़ रहे हैं तथा कितने ही लोग जीवन भर के लिए अपंग हो रहे हैं, मगर न तो लोग इनसे कोई सीख लेकर स्वयं पर नियंत्रण रख पा रहे हैं और न ही ऐसे व्यवसाइयों पर कोई अंकुश लग पाया है। जब कोई हादसा होता है तब कुछ दिनों तक हलचल मचती है। लोगों में, क्षेत्र में दहशत का माहौल होता है फिर सबकुछ क्रमशः जस का तस हो जाता है। केवल तड़पते रह जाते हैं वे परिवार जिन्हें किसी अपने को खोना पड़ा है या फिर वो परिवार जिसके कमाऊ सदस्य ने हादसे की बदौलत अपनी कार्यक्षमता गंवा दी है।

सर्वाधिक आश्चर्य की बात ये है कि नशाखोरी करने वाले जिन लोगों को मुख्यतः इन हादसों से सबक लेनी चाहिए, उन्हें मानो कोई फर्क ही नहीं पड़ता क्योंकि वे बार-बार अपनी लत से प्रेरित होकर इन दुकानों की रूख करते है जबकि हादसों से प्रभावित लोगों और उनके परिवारों की दुर्दशा उनके आंखों के सामने होती है।

अब अगर जिन्हें संभलना चाहिए वे ही न संभलना चाहें तो कोई क्या कर सकता है। बहरहाल इस हादसे के आरोपियों के खोजबीन में पुलिस लगी है। अपेक्षा यही है कि पकड़े जाने पर इन्हें सख्ततम सजा मिलेगी ताकि कम से कम कानून का कड़ा संदेश लोगों तक जा सके।

राज-काज

भाजपा का एक वादा पूरा

भाजपा को एक जमाने में अपने सहयोगियों को लुभाने के लिए एक बार अयोध्या में भगवान राम के भव्य मंदिर के निर्माण के विवादास्पद मुद्दे को पीछे छोडऩा पड़ा था, आज इसके निर्माण की शुरुआत अपने विरोधियों पर उसकी वैचारिक जीत के रूप में सामने आई है। विपक्षी नेता भी इसका स्वागत कर रहे हैं। इत्तेफाक से जिस दिन मंदिर निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हिन्दुत्व के आंदोलन की अगुवाई करने वाले संघ प्रमुख मोहन भागवत की उपस्थिति में शिलान्यास किया उसी दिन जम्मू एवं कश्मीर से धारा 370 को निरस्त करने की पहली वर्षगांठ भी है।

आडवाणी को न बुलाना

राम मंदिर के भूमिपूजन में आंदोलन के पुरोधा लालकृष्ण आडवाणी को न बुलाना हर किसी को अखर गया। पहले चर्चा थी कि आडवाणी बुलाए जाएंगे, मगर बाद में स्पष्ट हो गया कि उन्हें यहां नहीं लाया जाएगा। इसे लेकर कई लोगों ने नाराजगी भी जताई। ट्रस्ट सफाई में कुछ भी कहे मगर जो टीस हर किसी के मन में है, वह दूर होने वाली नहीं है।

कोरोना वायरस का हवा से फैलना एक बड़ा खतरा

विशेष रूप से भीड़, बंद, खराब हवादार सेटिंग्स में एयरबोर्न ट्रांसमिशन की संभावना को खारिज नहीं किया जा सकता है।

आज भारत में कोरोना के मरीज सबसे ज्यादा हो चुके है जो एक बेहद चिंताजनक स्थिति है, हमारे लिए मृत्युदर कम होना ही एक संतोष की बात है जिसकी वजह से हमने आज इससे डरना बंद कर दिया है मगर ये स्थिति इलाज के अभाव में कभी भी करवट ले सकती है ण्तेजी से फैलते कोरोना संक्रमण पर विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक एजेंसी ने स्वीकार किया कि कोरोनोवायरस के हवाई प्रसारण से इनडोर स्थानों में खतरा हो सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने आखिरकार यह स्वीकार किया कि कोरोना वायरस संक्रमण के हवा से फैलने के सबूत हैं एजेंसी के वैज्ञानिकों ने एक समाचार ब्रीफिंग में कहा कि विशेष रूप से भीड़, बंद, खराब हवादार सेटिंग्स में एयरबोर्न ट्रांसमिशन की संभावना को खारिज नहीं किया जा सकता है। एजेंसी के मुताबिक इनडोर वातावरण के लिए उचित वेंटिलेशन होना बेहद जरूरी है।

क्लीनिकल इंफेक्शियस डिज़ीज़ जर्नल के एक खुले ख़त में 32 देशों के 239 वैज्ञानिकों ने इस बात के प्रमाण दिए है कि ये फ़्लोटिंग वायरस है जो हवा में ठहर सकता है और सांस लेने पर लोगों को संक्रमित कर सकता है यदि किसी संक्रमित मरीज को किसी भी बंद स्थान पर काफी समय तक रखा जाए तो उस स्थान में भी हावी में कोरोना वायरस मौजूद रहेगा और उस हवा के संपर्क में आने से कोई भी कोरोना संक्रमित हो सकता हैण् विश्व स्वास्थ्य संगठन ने माना है कि संक्रमित व्यक्ति के छींकने और खांसने से निकली छोटी बूंदें काफी देर तक हवा में रहती हैं और इससे दूसरो को संक्रमण का खतरा रहता है इसलिए सबको हवा से हुए प्रसार से सतर्क रहने की जरूरत है

भारत के सीअसआईआर के चीफ शेखर सी मांडे ने भी अपने ब्लॉग में इन सभी चिंताओं पर अपनी राय रखी है और विभिन्न स्टडी तथा विश्लेषणों के हवाले से लिखा कि जितने भी सबूत निकले हैं उससे पता चलता है कि कोरोना का हवा से भी प्रसार संभव है। उन्होंने कहा कि श्यह तो साफहै कि जब लोग छींकते हैं या खांसते हैं तो उससे हवा में बूंदें निकलती हैं। बड़ी बूंदें तो जमीन पर गिर जाती हैं लेकिन छोटी बूंदें हवा में काफी समय तैरती रहती हैं। किसी संक्रमित व्यक्ति के छींकने या खांसने से निकलने वाली बड़ी बूंदें तो जमीन पर गिर जाती हैं और यह ज्यादा दूर तक नहीं जाती हैं। लेकिन छोटी बूंदें लंबे समय तक हवा में मौजूद रहती हैं। ये छोटी बूंदे एरोसोल की तरह होती है।

एरोसोल हवा में निलंबित कण है जो धूल, धुंध, या धूम्रपान से बन सकते हैं। वायरस के संचरण के संदर्भ में एरोसोल सांस की बूंदों की तुलना में छोटे 5 माइक्रोन या उससे कमद्ध होते है, सामान्य इनडोर वायु वेगों पर एक 5 माइक्रोन छोटी बूंद दस मीटर की दूरी तय करती है जो कि एक विशिष्ट कमरे के पैमाने से बहुत अधिक है। ये लंबे समय तक हवा में निलंबित रहते हैं, एक व्यक्ति जो कोरोना पॉजिटिव है, वह छोटे खराब हवादार कमरे में 1.2 मीटर की दूरी पर भी खड़े लोगों को संक्रमित करने की संभावना रखता है। ऐसे वातावरण में रहने वाले लोग इन वायरस को संभावित रूप से एक दूसरे में संक्रमित कर सकते हैंए जिसके परिणाम स्वरूप संक्रमण और बीमारी होती है। इसलिए तो कोविद.19 संक्रमण फैलाने वाली सांस की बूंदों ने महामारी की शुरुआत से हमें मास्क पहनना, दूरी रखना, और हाथ धोने की दिनचर्या अपनाने को मजबूर किया है।

छोटी बूंद के रूप में बूंदों और एरोसोल को छोटी बूंदों के रूप में देखने से एक छोटी बूंद और एरोसोल के बीच अंतर का अनुमान लगाया जा सकता है। एक बीमार व्यक्ति के मुंह या नाक से आने वाली बूंदें भारी होती हैं, और छह फीट से अधिक आगे बढ़ने से पहले जमीन पर गिर सकती हैं। तभी तो हम कोरोना से बचने के लिए एक दूसरे के बीच 1.5 मीटर से अधिक दूरी बनाए रखने के लिए जोर दे रहे है। एरोसोल, जो बहुत छोटे होते हैं, लैंडिंग से पहले लंबे समय तक लम्बी यात्रा कर सकते हैं। एरोसोल की कल्पना कुछ हद तक एक शराबी की तरह हो सकती है जो रात में खराब रोशनी वाली सड़क पर चलता जाता है जब तक उसको उस रस्ते से दूर नहीं किया जाता।

ठीक वैसे ही छोटी बूंदों और कणों ;व्यास ढ5 माइक्रोन .10 माइक्रोनद्ध को हवा में अनिश्चित काल तक निलंबित रखा जा सकता है, जब तक कि वे एक हल्के हवा या वेंटिलेशन एयरफ्लो से दूर नहीं किए जाते हैं। यह एक दीवार, फर्नीचर या एक व्यक्ति का शरीर हो सकता है जो इस प्रकार सफलतापूर्वक लोगों को संक्रमित कर सकता है। वायरस का जीवनकाल जो किसी सतह पर गिरता है वह कुछ मिनटों से लेकर कुछ घंटों के बीच कहीं भी हो सकता है। एक हालिया अध्ययन में, यह पाया गया कि सबसे संक्रमित क्षेत्र रोगी क्षेत्र में 1 मीटर.वर्ग वाला मोबाइल शौचालय था। ये भी पाया गया है कि जोखिम वातानुकूलित कमरों में सबसे अधिक है, विशेष रूप से केबिन या पिंजरे जैसे कमरे। दूसरी ओर विशाल हवादार कमरे, संचरण का कम जोखिम वहन करते हैं। इसका मतलब यह है कि एक आउटडोर सब्जी बाजार एक सुपरमार्केट से अधिक सुरक्षित है और एक सुपरमार्केट एक छोटे डिपार्टमेंटल स्टोर की तुलना में सुरक्षित है हालांकि यह माना जाता है कि लोग शारीरिक संतुलन के मानदंडों को बनाए रखते हैं। तो अगर आप घर के अंदर हैं, तो अधिकतम वेंटिलेशन सुनिश्चित करने के लिए खिड़कियां खोलें। कोरोनावायरस का एयरबोर्न संचरण संभावित रूप से एक चिंता का विषय है, इसका मतलब है कि वायरस आमतौर पर निकट संपर्क की अनुपस्थिति में यात्रा कर सकता या फ़ैल सकता है।

यह इस संभावना को भी बढ़ाता है कि वायरस हवा की धाराओं पर यात्रा कर सकता है, और यहां तक कि एयर कंडीशनिंग के माध्यम से प्रेषित किया जा सकता है। इसका मतलब यह है कि सामाजिक दूरी हमेशा प्रभावी नहीं हो सकती है और कोरोना वायरस विशेष रूप से कम वेंटिलेशन के साथ भीड़ वाले इनडोर क्षेत्रों में एक बड़ा खतरा हो सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन इस मामले में फिलहाल दुनियाभर के अलग.अलग देशों के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर इस पर और ज्यादा काम कर रहा है और जानकारी ये जुटाने की कोशिश कर रहा है कि ऐसी और कौन सी जगह है जहां, हवा के माध्यम से कोरोना वायरस फैल सकता है। खैर कुछ भी अभी तक हमें कोरोना के पैदा होने, फैलने और खत्म होने के बारे सही जानकारी नहीं मिल पाई है इसलिए सावधानी ही बचाव है।

प्रियंका सौरभ

(ये लेखक के अपने विचार है)

दक्षिण में आतंकवाद की आहट

जहां आतंकवाद से निपटने में केन्द्र सरकार अपनी ताकत झोंक रही है। वहीं आतंकवादी इसके नए-नए रास्ते तलाशने में लगे रहते है। इससे पहले भी हम आतंकवाद का दंष पंजाब में झेल चुके है। जम्मू-कश्मीर कई सालों से इसकी चपेट में है। जहॉं अब परिस्थितियों में सुधार शनै-शनै हो रहा है और आतंकवाद की कमर टूट रही है। परंतु दूसरी ओर इसके पनपने की भी आहट है। हाल ही में नेशनल इन्वेस्टीगेशन एजेंसी ने जुलाई माह के पहले सप्ताह में एक नए इस्लामिक आतंकवादी संगठन अल हिन्द से जुड़े इसके लगभग डेढ़ दर्जन सदस्यों को कर्नाटक के विभिन्न भागों से गिरफ्तार किया था। एजेंसी की ओर से कहा गया कि यह संगठन विश्व के अलग-अलग इस्लामिक संगठनों के शीर्ष संगठन तालिबान से जुड़ा हुआ है तथा दक्षिण के राज्यों में अपनी पैठ बढ़ाकर यहां बड़ी आतंकवादी घटना को अंजाम देने की तैयारी कर रहा था।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी देखें तो संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपनी ताजा रिपोर्ट में इसी बात को पुख्ता किया है और भारत को इस बढ़ते खतरे से आगाह किया है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्तमान में इस संगठन का लक्ष्य कर्नाटक और केरल को अपना मुख्य निशाना बनाना है। इस नए संगठन की नींव गत वर्ष अप्रैल माह में बंगलुरु में ही रखी गई थी। अदालत में एजेंसी द्वारा दाखिल की गई चार्जशीट में यह कहा गया है शुरू में इसके प्रमुख बंगलुरु के एक निवासी महबूब पाशा थे तथा वे अपने ऑफिस से ही इस संगठन को चला रहे थे। अल हिन्द का उद्देश्य दक्षिण भारत के चारों राज्यों को मिलाकर एक नया इस्लामिक प्रान्त, दूसरे शब्दों में नया मुस्लिम देश हिन्द विलाया स्थापित करना है। यह नया देश इस्लामिक शरिया कानून के अनुसार चलने वाला होगा। रिपोर्ट में जिसका शीर्षक भारतीय उप महाद्वीप में अल कायदा दिया गया है। इसमें इस समय लगभग 200 सदस्य हैं जो भारत, बांग्लादेश और पाकिस्तान से भर्ती किए गए है जिसका अमीर (मुखिया) महमूद ओसामा है, जो एक पाकिस्तानी है। इसे पिछले अमीर सना उल हक के मारे जाने के स्थान पर अमीर बनाया गया था। हक उत्तर प्रदेश का रहने वाला था तथा इस संगठन के अमीर के रूप में अफगानिस्तान में काम कर रहा था। एजेंसी के अनुसार इस संगठन तथा अल हिन्द का बड़ा लक्ष्य हक की शाहदत का बदला लेना है। एनएआई ने अपनी चार्जशीट इस सभी संगठनों के बारे में विस्तार से विवरण दिया है तथा यह भी बताया गया है कि ये किस प्रकार से काम करते हैं तथा इनको इन कामों के लिए धन किन लोगों से मिलता है और कैसे मिलता है। पिछले महीने जब केरल के सोना तस्करी कांड के जांच इस एजेंसी को दी गई तो उसने जिन आरोपों के अंतर्गत मामला दर्ज किया उसमे आंतकवादी धाराएं भी शामिल थीं। इस मामले की शुरुआती जाँच में यह बात सामने आई है कि तस्करी के जरिए खाड़ी के देशों से आने वाले सोने से मिलने वाली राशि मुस्लिम आतंकवादी संगठनों के पास जाने का शक है। इस मामले में हैदराबाद के एक नामी तस्कर के पूछताछ की गई है। तस्करी के जरिए केरल की राजधानी लाए गए सोने के लिए डिप्लोमेटिक चैनल का दुरूपयोग किया गया था। 30 किलो जो सोना पकड़ा गया, उसकी कीमत लगभग 15 करोड़ रूपये आंकी गई है। एजेंसी का कहना है तस्करी के सोने के यह पहली खेप नहीं थी। वास्तव में पिछले तीन चार साल में ऐसे कम से कम 12 खेपों के जरिए सोना यहा लाया गया। इस संबंध में एजेंसी दुबई में बसे केरल मूल के एक मुस्लिम व्यापारी को देश में लाना चाहती है। ऐसा माना जा रहा है कि हवाले के जरिए सोने की वहां खरीद के लिए धन इसी व्यापारी के माध्यम से ही पहुंचाया गया था।

इन सभी तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुवे ध्यान दिया जाये तो दक्षिण के राज्यों में उत्तर भारत के राज्यों की तुलना में मुस्लिमों में शिक्षा का प्रतिशत बहुत अधिक है। इसलिए इन मुस्लिम संगठनों से जुड़े दक्षिण राज्यों के युवा मुस्लिम अनपढ़ कट्टरपंथी मुस्लिम नहीं हैं, बल्कि कट्टरपंथी इस्लाम से पूरी तरह से प्रभावित और प्रेरित है। भारत से इराक के इस्लामिक स्टेट में शामिल होने के लिए जो मुस्लिम युवक वहां गए है उनमें से दक्षिण राज्यों के युवा मुस्लिम अधिक है। इनमें भी केरल सबसे आगे है। याद रहें कि लव जिहाद की शुरुआत भी केरल से ही हुई थी। जब इन घटनाओं की जांच इस एजेंसी को दी गई तो इसने जाँच में पाया कि एक योजनाबद्ध तरीके से कट्टरपंथी संगठनों से जुड़े मुस्लिम संगठन हिन्दू युवतियों को अपने जाल में फंसाते थे। युवती को शादी के बाद मुस्लिम बनने के लिए मजबूर कर देते थे। इनमें से बाद में कई युवक उन्हें अपने साथ इराक ले गए और इस्लामिक स्टेट जैसे घोर इस्लामिक आतंकवादी संगठन में शामिल हो गए। कर्नाटक में तटवर्ती उत्तर कर्नाटक के जिलों में कट्टरपंथी अधिक है। प्रतिबंधित छात्र संगठन सिमी को बनाने वाला मुस्लिम युवक वहां के भटकल स्थान का रहने वाला था। जांच एजेंसियों के राडार पर अभी भी यहाँ के मुस्लिम युवक रहते हैं। सिमी के जो सदस्य और पदाधिकारी इस समय जेल में और उनके खिलाफ मुकदमें चल रहे हैं, उनमें से अधिकांश प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से भटकल से ही संबंधित है। इस संगठनों से जुड़े सदस्यों ने सिमी पर प्रतिबन्ध के बाद कई नए संगठन बना लिए जिनमें से एक पीपुल फ्रंट ऑफइंडिया भी है। लगभग दो साल पहले बंगलुरु में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक वरिष्ठ सदस्य की हत्या के आरोप में जिनको गिरफ्तार किया गया था। वे भी इसी संगठन के सदस्य थे।

धनंजय कुमार व एस. लोकपाल

(ये लेखक के अपने विचार है)

राष्ट्र की अस्मिताः शौर्य दिवस

06 दिसम्बर 1992 को अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर बने एक जर्जर ढांचे को भारत के राष्ट्रीय स्वाभिमान पर एक विदेशी आक्रांता द्वारा लगाया गया कलंक का टीका मानकर लाखों कारसेवकों की भीड़ ने इस कलंक को मिटा दिया था। यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि श्रीराम जन्मभूमि को मुक्त करवाने का यह 78वां प्रयास था। इस दिन को कुछ लोगों ने शौर्य दिवस कहा तो कुछ लोगों ने शर्म का दिन करार कर दिया था।

एक ओर कुछ नेताओं के बयान आए कि विदेशी हमलावर बाबर के सेनापति मीरबांकी द्वारा राम मंदिर को तोड़कर उसी की नींव परए उसी के मलबे से बनाए गए ढांचे को गिराकर कारसेवकों ने भारत माता के भाल पर लगे धब्बे को सरयु नदी के पानी से धो डाला। अब किसी दूसरे बाबर की हिम्मत नहीं होगी कि फिर से भारतीय अस्मिता पर चोट कर सके।

कारसेवकों ने ढांचा गिराने के पूर्व वहां से रामलला की मूर्ति को हटाया और फिर ढांचा गिर जाने के पश्चात उस स्थान को सरयु नदी के जल से पवित्र किया था। पुनः श्रीराम लला की मूर्ति स्थापति की गई। इसकी सुरक्षा के लिए टीन और कपड़े का मंदिर बना दिया था। मुख्य पुजारी ने पूजा अर्चना कीए प्रसाद बांटाए जिसे सभी कारसेवकों सहित वहां उपस्थित सुरक्षाकर्मियों और सरकारी अधिकारियों ने भी ग्रहण किया। यह राष्ट्र के स्वाभिमान का प्रकटीकरण था।

ढांचे के मलबे से छोटी.छोटी मूर्तियोंए टूटे खम्भों और भित्ति चित्रों के रूप में मंदिर के जो सबूत मिलेए यही सबूत बाद में हुई खुदाइयों और कई भूगर्भशास्त्रियों के प्रयासों का आधार बने। उल्लेखनीय है कि कारसेवकों द्वारा एकत्रित किये गए इन सबूतों को बाकायदा न्यायालय के आदेश से सुरक्षित रखा गया और न्यायालय के ही निर्णय से कारसेवकों द्वारा बनाए गए अस्थायी मंदिर ;टीन और कपड़े के मंदिरद्ध को सरकारी सुरक्षा प्रदान की गई थी। अतः इस मंदिर को सरकार सहित सभी भारतीयों की मान्यता प्राप्त थी।

रामभक्त कारसेवकों द्वारा गिराए गए ढांचे के बाद प्राप्त हुए मंदिर के प्रारम्भिक सबूतों ने ही बाद की न्यायिक प्रक्रिया को गति प्रदान की। पिछले कई दशकों से अत्यंत धीमी गति से सरक रही न्यायिक प्रक्रिया तेज हुई और सरकारें भी हरकत में आईं। वार्तालापोंए समझौतों और सबूतों के आदान.प्रदान का सिलसिला तेज हुआ। उच्च न्यायालय में तेज हुई कानूनी कार्यवाही में रामजन्मभूमि के पक्षकारों ने ढेरों साक्ष्य प्रस्तुत किए जो पुरातात्विक तथ्यों पर आधारित थे। ढांचा गिरने के बाद मिले मंदिर के सबूतों का भी न्यायालय ने संज्ञान लिया। न्यायालय ने एक विश्व विख्यात कम्पनी टोजो इंटरनेशनल को सच्चाई जानने के लिए ग्राउंड पैनिट्रेटिंग राडार सर्वेक्षण करने की जिम्मेदारी सौंपी। इस कम्पनी द्वारा शुरु किए गए सर्वेक्षण में जापानए कोरिया और कनाडा के कई बड़े भूगर्भ शास्त्री भी शामिल हुए थे।

ढांचे के नीचे कोई बड़ा भवन होने के संकेत सामने आ गए। इन्हीं संकेतों के मद्देनजर न्यायालय ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ;एएसआईद्ध को ढांचे के नीचे के धरातल के उत्खनन का आदेश दे दिया। उत्खनन की कार्यवाही होते ही श्रीराम मंदिर के खम्भेए फर्शए ईंट इत्यादि प्राप्त हो गए। सर्वविदित है कि 1993 में राष्ट्रपति ने सर्वोच्च न्यायालय से जानकारी मांगी थी कि ढांचे वाले स्थान पर 1528 के पूर्व कभी कोई मंदिर थाघ् भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर दे दिया कि ढांचे के नीचे एक भव्य मंदिर था।

अयोध्या मामले की सुनवाई करने वाली इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने इसी रपट को मुख्य आधार बनाते हुए अपने फैसले को तैयार किया था। पीठ में शामिल तीनों ही न्यायधीशों एस.यू.खानए सुधीर अग्रवाल और धर्मवीर शर्मा ने सर्वसम्मत राय से निर्णय देते हुए माना कि वर्तमान में रामलला जहां मौजूद हैं वही उनका जन्मस्थान है। निर्णय में तो यहां तक भी कहा गया कि जहां प्रभु राम के बाल स्वरूप की पूजा होती आई है, वह पूरी भूमि देवतुल्य है। तथाकथित बाबरी ढांचा हिन्दुओं के मंदिर को तोड़कर बनाया गया था।

न्यायालय ने अपने फैसले में यह तथ्य भी उजागर कर दिया कि कथित बाबरी ढांचा मस्जिद नहीं था। मुस्लिम मतानुसार किसी भी प्रकार की विवादित जगह पर अदा की गई नमाज को खुदा स्वीकार नहीं करता। फिर इस स्थान पर तो पहले दूसरा धर्मस्थल था और उसे बचाने के लिए लाखों हिन्दुओं का खून बहा था। मुसलमान विद्वान इस ढांचे को मस्जिद इसलिए नहीं मानते थे क्योंकि इसमें इस्लामिक उसूलों को दफन किया गया था। हिन्दुओं ने इसे आज तक मस्जिद इसलिए नहीं माना क्योंकि जहां गर्भगृह है, वहीं राम का जन्मस्थान था।

स्पष्ट है कि एक विदेशी हमलावर द्वारा राममंदिर तोड़कर उस पर चढ़ाया गया ढांचा गिर जाने का दिन राष्ट्रीय स्वाभिमान की विजय का दिन था। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने भी अपने फैसले में अयोध्या आंदोलन और कारसेवकों के शौर्य की सार्थकता पर कानूनी मोहर लगा दी थी।

नरेन्द्र सहगल

(ये लेखक के अपने विचार है)

चंबल एक्सप्रेस-वे से होगा जंगल में मंगल

चम्बल एक्सप्रेस-वे के निर्माण की घोषणा ने सदियों से उपेक्षित, पिछड़े और घोर अभावों में जीने वाले चम्बल के सैकड़ों गाँवों के मन में आशा का संचार कर दिया है। इस परियोजना के अंतर्गत 8250 करोड़ रुपये की राशि से चम्बल के किनारे.किनारे राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य की सीमा पर जहाँ सामान्यतः बाढ़ का पानी नहीं पहुँच पाता 404 किलोमीटर लम्बे राजमार्ग का निर्माण 2023 तक किया जाना है। यह एक्सप्रेस.वे राजस्थान के कोटा से प्रारंभ होकर मध्यप्रदेश के श्योपुर, मुरैना और भिंड जिले से होता हुआ उत्तर प्रदेश के इटावा के पास एन एच 27 से जुड़ेगा जो कानपुर से कोटा के लिए वैकल्पिक मार्ग खोलेगा। इस राजमार्ग के बनने से राजस्थान मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश से सटे चम्बल के बीहड़ों में विकास की एक नई संभावना पैदा होने जा रही है।

इस एक्सप्रेस.वे का सर्वाधिक क्षेत्र केंद्रीय कृषिमंत्री नरेंद्र सिंह जी तोमर के निर्वाचन क्षेत्र में आता है इसीलिये वे इस प्रोजेक्ट को लेकर व्यक्तिगत रूप से भी प्रयासरत हैं। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह जी के लिए यह प्रोजेक्ट चम्बल क्षेत्र में सरकार के प्रति विश्वास जगाने का सुनहरा अवसर है। क्योंकि वर्तमान सरकार बनाने में इस क्षेत्र के विधायकों की बड़ी भूमिका है। माननीय मुख्यमंत्री जी ने इस एक्सप्रेस.वे को प्रोग्रेस.वे की संज्ञा दी है। यही नहीं उन्होंने कैविनेट मीटिंग में इसका प्रस्ताव भी पारित कर दिया है। भारत की सुरक्षा में बड़ी संख्या में अपने बच्चों को भेजने वाले चम्बल अंचल के लिए कितने दुःख की बात है कि उसे आज भी डाकुओं के लिए ही उल्लेखित किया जाता है जबकि चम्बल बहुत पहले ही डाकुओं से मुक्त हो चुकी है। पीला सोना ;सरसोंद्ध उपजाने वाली चम्बल को अभी तक विकास का उचित अवसर नहीं दिया गया। राजनीतिक रूप से पिछड़े होने के कारण यह क्षेत्र अभी भी विकास की मुख्य धारा से कटा हुआ है। मुरैना जिले की रतन बसई ग्राम पंचायत के चम्बल नदी के किनारे बसे हुए गाँव सुखध्यान का पुरा, इन्द्रजीत का पूरा, रामगढ़ आदि चौमासे वर्षा के दिनों में मुख्य मार्गों से पूरी तरह कट जाते हैं। यहाँ कृषि के अतिरिक्त जीविका का अन्य कोई साधन नहीं है और कृषि भी चम्बल पर निर्भर है। पिछले वर्ष आई बाड़ के कारण हुए दल.दल ने चुस्सलई गाँव जहाँ तक अब पक्का मार्ग बनगया है, तक कई किसानों के खेत छीन लिए थे। बेरोजगारी और निर्धनता के कारण धीरे.धीरे लोग गाँवों से पलायन करते जा रहे हैं। ऐसे में इस राजमार्ग ने पुनः एक आशा का दीप जलाया है किन्तु वह तभी कारगर होगा जब यहाँ उद्योग स्थापित हों व लोगों को स्व रोजगार के लिए भी प्रेरित और प्रशिक्षित किया जाए। चम्बल के बीहड़ों की सबसे बड़ी विशेषता यहाँ मिट्टी के पहाड़ टीले हैं जिन्हें आसानी से समतल किया जा सकता है, जबकि अन्य जंगलों और बीहड़ों में पथरीली भूमि होने के कारण खुदाई में बहुत कठिनाई आती है।

डॉ. रामकिशोर उपाध्याय

(ये लेखक के अपने विचार है)